⇒ प्राथमिक समूह → चार्ल्स कूले ने अपनी पुस्तक Social ~~Organization~~ Organization में सन् 1909 में प्राथमिक समूह की अवधारणा प्रस्तुत की।

- खेल-कूद के साथियों, परिवार तथा पड़ोस

⇒ विशेषता → (i) शारीरिक समीपता बाहरी
(ii) समूह का लघु आकार
(iii) सम्बन्धों की अवधि

⇒ आन्तरिक विशेषताएं - (i) उद्देश्यों की समानता
(ii) सम्बन्ध स्वयं साध्य होते हैं
(iii) सम्बन्ध भी वैयक्तिक होते हैं
(iv) सम्बन्ध सम्पूर्ण होते हैं
(v) सम्बन्ध का स्वतः विकास
(vi) प्राथमिक सम्बन्धों की नियन्त्रण शक्ति

Notes

⇒ प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह से मिलते-जुलते सम्बोंध गैमिनशैफ्ट व गैसलशैफ्ट हैं, जिसे जर्मन समाजशास्त्री टानीन ने विकसित किया था। गैमिनशैफ्ट - समुदाय
गैसलशैफ्ट - समाज

प्राथमिक समूहों का महत्व →

(i) गुणों का विकास
(ii) मनोवैज्ञानिक सुरक्षा
(iii) मनोरंजन प्रदान करना
(iv) सामाजिक प्रतिमानों के पालन एवं नियंत्रण में योगदान
(v) व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि
(vi) व्यक्ति व समाज के बीच कड़ी
(vii) व्यक्तित्व निर्माण में योग
(viii) पशु प्रवृत्तियों का मानवीकरण
(ix) आन्तरिक संतोष प्रदान करना
(x) सांस्कृतिक संचार

द्वैतीयिक समूहों की विशेषताएं →

(i) ये समूह जान-बूझकर कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठित किए जाते हैं।
(ii) इन समूहों में सदस्यों का एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानना आवश्यक नहीं है। यहां संचार के साधनों द्वारा सदस्यों के बीच सम्बन्ध स्थापित होते हैं।
(iii) इन समूहों में शारीरिक निकटता का अभाव पाया जाता है।
(iv) इनका आकार प्राथमिक समूहों की तुलना में काफी विस्तृत होता है।
(v) ये समूह व्यक्ति के जीवन के किसी पहलू विशेष से सम्बन्धित होते हैं, अतः ये व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष को ही साधारणतः प्रभावित कर पाते हैं।

(vi) इन समूहों मे सदस्यों के उत्तरदायित्व सीमित होते है।

(vii) इनमे सम्बन्ध संविदा या समझौते की प्रकृति के होते है जो निश्चित नियमों एवं शर्तों के आधार पर बनते है।

(viii) सम्बन्धों मे औपचारिकता पायी जाती है। यहां व्यक्ति के बजाय प्रस्थिति का महत्व ज्यादा होता है।

(ix) यहां सम्बन्धो मे घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। यहां व्यक्ति के बीच "खाओ और जाओ" के सम्बन्ध होते है।

(x) इनका स्वतः विकास नहीं होता। जैसे ही आवश्यकताएं बदलती हैं, उनके साथ ही इन समूहों की प्रकृति में भी परिवर्तन आ जाता है।

⇒ प्राथमिक एवं द्वैतीयक समूहों में अन्तर ->

(i) आकार छोटा होता है

(ii) सदस्यों की संख्या कम

(iii) सदस्यों में शारीरिक समीपता पायी जाती है।

(iv) सदस्यों मे स्थायी सम्बन्ध पाए जाते है।

(v) सम्बन्धों में निरन्तरता पायी जाती है।

(vi) सम्बन्ध अनौपचारिक होते है।

(vii) सम्बन्ध स्वतः निर्मित होते है।

(viii) सम्बन्ध सर्वांगीण होते है। — (i) विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर बनाए जाते है।

(ix) सम्बन्ध वैयक्तिक होते है।

(x) ऐसे समूहों मे नियन्त्रण प्राथमिक एवं अनौपचारिक साधनो द्वारा होता है।

(xi) सभी लोगों के उद्देश्य एक ही होते है।

(xii) सम्बन्ध स्वयं साध्य होते है।

(xiii) सम्बन्धो मे घनिष्ठता एवं आत्मीयता पायी जाती है।

(xiv) ये सरल, ग्रामीण एवं आदिम समाजों मे अधिक पाए जाते है।

(xv) इनकी सदस्यता अनिवार्य है।

(xvi) इनमे हम की भावना पायी जाती है।

(xvii) इनमें सम्बन्ध आन्तरिक होते हैं, दिखावे के नहीं।
(xviii) इनका मानव के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
(xix) ये व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करते हैं।
(xx) इनमें आमने - सामने के सम्बन्ध पाए जाते हैं।
(xxi) सदा-यों के बीच समानता के आधार पर सम्बन्ध पाए जाते
11 हैं।
(xxii) ये सामूहिकता को जन्म देते हैं।
(xxiii) प्राथमिक समूह अति प्राचीन हैं।
(xxiv) इनमें व्यक्ति अपना व्यक्तित्व समूह के साथ घुला - मिला देता
13 है।
(xxv) इनका कार्य - क्षेत्र सीमित होता है।
(xxvi) इनका आधार नैतिकता तथा परम्परागत नियम है।
(xxvii) ये सार्वभौमिक हैं।
(xxviii) इन समूहों में व्यक्ति सरलता से अनुकूलन कर लेता है।
(xxix) एक व्यक्ति बाल्यकाल में ही इनके सम्पर्क में आ जाता है और
16 ये उसके समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(xxx) इनकी संख्या बहुत कम है।
(xxxi) प्राथमिक समूहों में कोई द्वैतीयिक समूह नहीं होते।